आपन माया की होंस जो करी, और माया तो दुख निधान जी।
सो याद देने को रे साथजी, पिउ भए अन्तरध्यानजी।। १० ।।

हमने परमधाम में माया की चाहना की थी। माया तो दुःख का घर है। उसी की चाहना की याद दिलाने के लिए पियाजी अन्तर्ध्यान हुए।

नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी।
एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी।। ११ ।।

नहीं तो यह हमारे धनी हैं। यह आधे क्षण का हमारे से बिछुड़ना सहन नहीं कर सकते। विचार कर हम यह देखें तो तारतम से साफ-साफ पहचान होती है।

इन समे तारतम की समझन, क्योंकर कहिए सोए जी।
अनेक विध का तारतम इत, तब घर लीला प्रगट होए जी।। १२ ।।

इस समय तारतम को ही समझना है। मैं कैसे कहूं? क्योंकि संसार में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं जो घर का ज्ञान तो देते हैं, पर सब संसार में ही घटा देते हैं, पर तारतम वाणी के बिना घर की पहचान होती नहीं है।

पेहेचानवेको पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी।। १३ ।।

अपने धनी की पहचान करने के लिए जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम को ही विचारना होगा। हे सुन्दरसाथजी! यह बात दिल में समझ लेना, ताकि तुम्हारा कोई संशय बाकी न रह जाए।

पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी।
तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी।। १४ ।।

पहली बार बृज में जब आए थे, तब वहां तारतम ज्ञान नहीं था। इसलिए हमें यहां दुबारा आना पड़ा, तुम विचार कर देखो।

आसंका न रहे किसी की, जो कीजे तारतम विचार जी।
सो रोसनाई ले तारतम की, आए आपन में आधार जी।। १५ ।।

यदि तारतम वाणी से विचार कर देखें तो किसी प्रकार का संशय बाकी नहीं रहेगा। उस जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर खुद धनी हमारे बीच पधारे हैं।

अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी।। १६ ।।

इस उजाले में भी यदि हमने धनी को नहीं पहचाना तो फिर कसूर (दोष) हमारा है। श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि धनी की मेहर बेशुमार है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। २१ ।।

राग धनाश्री

साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी।
धनी मिले आपन कों माया में, जिन भूलो ए अवसर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! याद करो अपने वचनों को भूलो मत। धनी हमें माया में मिले हैं। अब इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना।

Nijanand App

सुन्दरबाई अन्तरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ वचन ए चित्त दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) अन्दर बैठकर कह रही हैं कि ज्ञान के वचन बहुत भारी हैं। हे सुन्दरसाथजी! इनको चित्त देकर सुनना और मिलकर विचार करना।

एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान जी।
प्रगट मैं तुमको पेहेले कह्या, भी कहूं निरवान जी।। ३ ।।

हे साथजी! तुम इसी रास्ते पर चलना। यही रास्ता ठीक है। मैंने तो पहले भी साफ-साफ कहा है। और भी निश्चय करके कहती हूं।

अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगत जी।
कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूं ना हुए त्रपत जी।। ४ ।।

तुमने सब कुछ देख लिया है, इसलिए अब माया में मन न लगाओ। मैंने तुम्हें कई तरह से समझाया है। अभी तक तुम्हारी तसल्ली नहीं हुई है (सन्तुष्ट नहीं हुए)।

जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी।
पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी।। ५ ।।

अब जितने दिन तक माया में रहना पड़े, एक पल के लिए भी रास को नहीं छोड़ो। परमधाम के पच्चीस पक्षों में चित्त लगाओ, तब आपको धनी की पहचान हो जाएगी।

अनेक विध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिन जी।
पांउ भरो ए वचन देखके, पेहेले बृज रास चलन जी।। ६ ।।

मैंने तुमको अनेक तरह से समझाया है कि अब देरी करने का समय नहीं है। इस वाणी को देखकर जैसे पहली बार बृज से रास में गए थे, उसी तरह से अब चलो, संसार छोड़ो।

रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक अपनी परवान जी।
ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोडूं तुमें निरवान जी।। ७ ।।

रास के ज्ञान को एक पल के लिए भी मत छोड़ो। इसमें अपनी लीला है। यह संसार तुमसे किसी तरह से छूटेगा नहीं, पर मैं तुमको निश्चित रूप से नहीं छोडूंगी।

कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी।
अब कोटक छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के वचन कह रही हैं, जिन वचनों से परमधाम की पहचान होती है। अब करोड़ छल भी माया करे तो भी श्री राजजी के चरण नहीं छूटेंगे।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २९ ।।

लीला को प्रकास होना–आत्मा को प्रकास उपज्यो

ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत।
एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए।। १ ।।

न मेरे मन में और न चित्त में कोई विचार था और न मेरे हृदय में ही कोई इतना ज्ञान था। मेरी एक शब्द कहने की शक्ति नहीं थी, पर धनी की मेहर (कृपा) ऐसी हुई कि मानो नदी के पूर (प्रवाह) के समान ज्ञान अन्दर आ गया है।

Nijanand App